चित्र: कैरन हैडॉक

डाकिया डाक लाया

कालू राम शर्मा

मास्साब कक्षा में अटेंडेंस ले रहे थे। उन्होंने रजिस्टर में देखकर नाम पुकारा, “नारंगी!”

नारंगी अपनी जगह पर उठी – “यस, मास्साब।”

नारंगी के बाद अगला नाम पुकारने की बजाय वे रुक गए। चश्मे में से झाँककर और झबरीली मूँछों को सँवारते हुए मास्साब ने पहले पीछे बैठे बच्चों की ओर देखा, और फिर नारंगी की ओर देखते हुए बोले, “जाओ, तुम्हें बड़े सर ने बुलाया है।”

नारंगी को भ्रम हुआ कि मास्साब किसी और से कह रहे होंगे। इसलिए वह अपनी जगह पर ही बैठी रही। अब मास्साब चश्मे को साफ करने के लिए अपनी जेब में से रूमाल निकालते हुए बोले, “...अरे, नारंगी को ही कह रहा हूँ।”

नारंगी घबरा गई। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह करे तो करे क्या। मास्साब अटेंडेंस में उलझे हुए थे। उधर नारंगी अपनी जगह पर सहमी-सी खड़ी थी। मास्साब ने एक बार फिर उसकी ओर देखा और जाने का इशारा किया। कक्षा के बच्चे नारंगी की ओर इस सोच के साथ देख रहे थे कि उसने कोई गलत काम किया होगा। नारंगी के पैर धीरे-धीरे उठ रहे थे। कक्षा की दहलीज़ लाँघते हुए, उसने एक बार कक्षा की ओर मुड़कर देखा और फिर मास्साब की ओर। वह धीरे-धीरे, डरते-डरते हुए जा रही थी। वह सोच रही थी कि बड़े सर के पास जाने का अर्थ है – किसी-न-किसी गलती की सज़ा।

वैसे प्रधानाध्यापक का बच्चों से कोई लेना-देना नहीं होता था। साल में दो-चार बार, ऊधम करने वाले बच्चों को बुलाकर वे फटकार लगा देते।

प्रधानाध्यापक अपने स्कूल के

शिक्षकों को आदेशात्मक सलाह दिया करते थे कि बच्चों को नियंत्रित करने का सही तरीका है कि साल में एक-आधी बार चपत लगा दी जाए। यही वजह थी कि वे कई बार उन बच्चों को भी दण्डित कर देते थे जो बेगुनाह होते थे।

नारंगी सोच रही थी कि आज उसकी बारी है, और अगर बड़े सर ने डाँटा तो वह इतना तो पूछ ही लेगी कि किस बात के लिए सज़ा दी जा रही है। वह डर वाले कल्पना-लोक में धँसती जा रही थी और सोचती जा रही थी कि कहीं बड़े सर उसकी चोटी पकड़कर मारेंगे तो नहीं। फिर वह सोचने लगी कि ऐसा कोई गलत काम तो उसने नहीं किया है। वह अपने आप को हिम्मत बँधाने की पूरी कोशिश कर रही थी।

आखिर नारंगी प्रधानाध्यापक के कमरे के दरवाज़े तक पहुँच ही गई। वह दरवाज़े की चौखट को पकड़कर खड़ी हो गई। चौखट पकड़े, घबराई हुई नारंगी अब तक सोच रही थी कि आखिर उसने ऐसी क्या गलती की है। वह रोज़ ही स्कूल आ रही है। तब आखिर किस गलती पर उसे बड़े सर के सामने खड़ा किया जा रहा है?

कुर्सी पर बैठे प्रधानाध्यापक ने जैसे ही सिर ऊँचा कर दरवाज़े की ओर देखा, तो उनकी नज़र दरवाज़े पर खड़ी एक बच्ची पर पड़ी। प्रधानाध्यापक ने फाइल बन्द करते हुए कड़क आवाज़ में कहा, “क्या काम है?”

नारंगी ने कोई जवाब नहीं दिया। वह दरवाज़े की चौखट की किनोर को नाखून से कुरेदे जा रही थी। उसकी घबराहट और भी बढ़ गई थी। उसकी साँस तेज़ होती जा रही थी। अब तक कभी भी, बड़े सर से उसका इस तरह सामना नहीं हुआ था।

प्रधानाध्यापक फिर से अपने काम में मगन हो गए। टेबल पर रखा रजिस्टर जब उठाया, तो उसके नीचे एक नीले रंग के अन्तर्देशीय पत्र को देख बुदबुदाए, “हूँ...”

प्रधानाध्यापक ने पूछा, “तुम्हारा ही नाम है ‘नारंगी’ ?”

डर के मारे नारंगी की साँस फूलने लगी। उसने ‘हाँ’ में सिर हिलाया।

प्रधानाध्यापक ने नारंगी को हाथ से इशारा करके कमरे में बुलाया। “ये लो... तुम्हारी चिट्ठी आई है।” नीले रंग की चिट्ठी नारंगी की ओर बढ़ाते हुए वे बोले, “कौन है ये सवालीराम?”

जाने-पहचाने सवालीराम का नाम सुनकर नारंगी की जान-में-जान आई। उसे समझने में देर नहीं लगी। नारंगी का डर काफूर होता जा रहा था। उसके चेहरे पर अब मुस्कराहट लौट रही थी। वह बोली, “बाल विज्ञान वाले सवालीराम हैं।”

प्रधानाध्यापक बोले, “अच्छा, बड़ा गज़ब का नाम है। नाम से तो लगता है कि ये सवाल करते होंगे।”

नारंगी हिम्मत करके बोली, "ऊँहूँ... हम सवाल करते हैं।"

चिट्ठी लेकर नारंगी कक्षा की ओर दौड़ पड़ी। नारंगी की साँस अब और ज़्यादा फूल रही थी। दरअसल, वह कक्षा से जाते हुए जितनी डरी-सहमी थी, उससे दुगुनी वह लौटते हुए खुशी के मारे फूली नहीं समा रही थी। प्रधानाध्यापक के कमरे से बाहर निकलते हुए वह चिट्ठी पर केवल अपना नाम ही पढ़ पाई थी। हाँफते हुए, नारंगी कक्षा में मास्साब से बिना पूछे ही घुस गई। नीले रंग की चिट्ठी को वह अपने हाथ में लहराते हुए खुशी के मारे झूम रही थी।

मास्साब अटेंडेंस ले चुके थे। उन्होंने नारंगी को इतना खुश देखकर पूछा, "क्यों भई, क्या बात है?"

हाँफती हुई नारंगी ने हाथ में चिट्ठी को लहराया और इतना ही बोल पाई, "सवाली... सवालीराम... की चि... चिट्ठी..."

मास्साब बोले, "क्या? सवालीराम की चिट्ठी... तुम्हें सवालीराम की चिट्ठी आई है?"

हर कोई नारंगी के हाथ में से चिट्ठी लेना चाह रहा था। आखिर चिट्ठी नारंगी के हाथों में से बच्चों के हाथों में जा चुकी थी और कक्षा में अफरा-तफरी का माहौल बन चुका था।

कक्षा की व्यवस्था बरकरार रखने के लिए मास्साब बोले, "शी... शी...!"

मगर बच्चे तो बच्चे ठहरे। मास्साब के शान्त करने के इशारे का बच्चों पर कोई असर नहीं हो रहा था। हर बच्चे की जिज्ञासा उफान पर थी, और वह जानना चाह रहा था कि आखिर चिट्ठी में लिखा क्या है। मास्साब ने बच्चों के साथ सवालीराम का ज़िक्र पहले कभी दो-तीन बार ज़रूर किया था।

शिक्षक प्रशिक्षण के चर्चा-सत्र के दौरान, 'बाल विज्ञान' नामक किताब में छपी हुई सवालीराम की चिट्ठी को शिक्षकों को पढ़ने को कहा गया था। दरअसल, यह चिट्ठी सवालीराम ने बच्चों के लिए लिखी है। मास्साब को याद आया कि उन्होंने प्रशिक्षण के दौरान स्रोत दल से पूछा था कि बच्चों की जिज्ञासा को कैसे शान्त किया जाए। इस सवाल पर स्रोत दल ने काफी अलग ढंग से तर्कपूर्ण चर्चा की थी। मास्साब को खयाल आया कि बच्चों की जिज्ञासा को शान्त नहीं करना है, बल्कि बच्चों की सोचने की भूख को और बढ़ाना है।

फिर भी, मास्साब को स्पष्ट नहीं था कि आखिर सवालीराम है कौन। मास्साब ने शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान ही यह जाना था कि बच्चों को जब खोजी पद्धति से विज्ञान पढ़ने का मौका मिलेगा, तो उनके दिमाग में कई प्रकार के सवाल उठेंगे। स्वाभाविक है कि बच्चों के इन सवालों के जवाब देने की कोई औपचारिक व्यवस्था होनी चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखते हुए

चित्र: उमेश चौहान

होशंगाबाद विज्ञान में 'सवालीराम' नामक एक पात्र की कल्पना की गई।

जब बच्चे कक्षा छठी में पहुँचे थे, तब मास्साब ने उन्हें सवालीराम के बारे में बताया था। उन्होंने बच्चों को बाल विज्ञान के शुरुआती पन्नों पर सवालीराम की बच्चों के नाम चिट्ठी पढ़ने को कहा था। मगर कुछ बच्चे तो ऐसे थे जो ठीक-से पढ़ भी नहीं पाते थे। और जो पढ़ पाते थे, वे समझ नहीं पाते थे कि लिखा क्या है। इस पर मास्साब ने कक्षा में सवालीराम की चिट्ठी को खुद पढ़कर, समझाते हुए सुनाया था।

तब बच्चों को यह भी कहा था कि वे चाहें तो सवालीराम को चिट्ठी भी लिख सकते हैं। सवालीराम का चित्र तो बच्चे बाल विज्ञान में देखते आ रहे थे। उन्हें वह चित्र देखने में बड़ा ही मज़ा आता। वे यह समझ गए थे कि सवालीराम के चित्र में कुछ सवाल लिखे हुए हैं, और उन सवालों से ही सवालीराम का चित्र बनाया गया है। हालाँकि, बाल विज्ञान में बने सवालीराम के चित्र में वे सवाल इतने बारीक ढंग से लिखे हुए थे कि वे ठीक-से पढ़ नहीं पाते थे। कुछ अस्पष्टता किताब की छपाई की वजह से भी थी। इसके बावजूद, जब भी कभी कक्षा में उनके हाथ बिल्लोरी काँच लग जाता, तो वे सवालीराम के चित्र में बारीक हुरूफों में लिखे हुए सवालों को पढ़ते।

आखिर मास्साब ने अपने हाथ को टेबल पर ठोककर, गरजते हुए कहा, "अरे भाई, ये क्या लगा रखा है तुम लोगों ने?"

मास्साब ने सबसे पहले चिट्ठी अपने कब्ज़े में की और कहा, "अच्छा, तो सवालीरामजी की चिट्ठी आई है। ...तो तुम्हारी चिट्ठी तुम ही खोलो।"

मास्साब ने नारंगी को चिट्ठी थमा दी। पर नारंगी को समझ नहीं आ रहा था कि इसको खोला कैसे जाए। उसने तो पहली बार ही किसी चिट्ठी को देखा था। और फिर उसके अपने

नाम पर तो यह पहली चिट्ठी आई थी। आखिर मास्साब ने नारंगी को अपने पास बुलाकर अन्तर्देशीय पत्र खोलने में मदद की।

नारंगी के नाम पर, उसके जीवन में यह पहला पत्र आया था। उसके दिमाग में हलचल मची हुई थी। हलचल तो हरेक बच्चे और मास्साब के दिमाग में भी मची हुई थी। इसरार सोच रहा था कि उसके नाम से चिट्ठी क्यों नहीं आई। ऐसा ही भागचन्द्र, डमरू और रघु भी सोच रहे थे। उनके मन में कुछ जलन की भावना भी पैदा हो रही थी। आखिर सवालीराम ने उन्हें चिट्ठी क्यों नहीं लिखी। मास्साब के दिमाग में हलचल इस बात की मची हुई थी कि उनकी कक्षा के एक बच्चे के नाम पर सवालीराम ने चिट्ठी भेजी है। मास्साब के नाम पर अब तक आदेश ज़रूर आए थे। मगर वे याद कर रहे थे कि ऐसी चिट्ठी तो उनके विद्यार्थी जीवन में कभी आई ही नहीं। वैसे इस गाँव में किसी बच्चे के नाम पर पहली बार ही चिट्ठी आई थी। मास्साब काफी खुश लग रहे थे कि उनकी कक्षा के एक विद्यार्थी और वह भी एक लड़की के नाम पर चिट्ठी आई है।

मास्साब ने नारंगी से कहा, “तो पढ़ो, पढ़ो... क्या लिखा है? हम सबको सुनाओ।”

नारंगी ने चिट्ठी में देखा तो सबसे ऊपर उसका नाम लिखा था। वह अपना नाम देखकर एक बार फिर से खुशी के मारे गुब्बारा बन चुकी थी।

मास्साब ने एक बार फिर से कहा, “पढ़ो न...”

बोर्ड के सामने, जहाँ मास्साब अकसर खड़े होते हैं, वहाँ नारंगी ने खड़े होकर चिट्ठी पढ़ना शुरू किया।

प्रिय नारंगी,

नमस्ते

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे बहुत अच्छा लगा कि तुमने पत्र लिखा और बताया कि बाल विज्ञान तुम्हें और तुम्हारे दोस्तों को अच्छी लगती है। मगर तुमने यह नहीं बताया कि आखिर तुम्हें बाल विज्ञान क्यों अच्छी लगती है। अगली बार जब तुम चिट्ठी लिखो तो ज़रूर बताना कि बाल विज्ञान में क्या अच्छा लगता है और क्या नहीं।

नारंगी, तुम्हारे पत्र से पता चला कि मास्साब तुम्हारी कक्षा को परिभ्रमण पर ले गए थे। स्कूल से बाहर जाकर अध्याय के लिए अपने आसपास से सामग्री इकट्ठी करने और उसे समझने में तुम्हें और तुम्हारी कक्षा

के बच्चों को काफी मज़ा आया, यह जानकर मुझे भी काफी अच्छा लगा। तुम्हारे मास्साब ने बच्चों को परिभ्रमण पर ले जाने का प्रयास किया, यह भी काबिल-ए-तारीफ है।

तो चलो, अब तुम्हारे सवालों पर आते हैं।

तुम्हारा पहला सवाल है कि ठण्ड के दिनों में सुबह-सुबह नदी, तालाब में से भाप निकलती क्यों दिखती है? ठण्ड में हमारे मुँह में से भी भाप क्यों निकलती है?

जवाब: वैसे तो नदी या तालाब से हमेशा भाप निकलती रहती है। और हमारे मुँह में से भी भाप निकलती रहती है। गर्मी के दिनों में भी निकलती है। मगर गर्मी के दिनों में जो भाप निकलती है, वह हवा में घुल-मिल जाती है और हमें दिखाई नहीं देती। यह तो तुम जानती हो कि ठण्ड के दिनों में वातावरण का तापक्रम कम हो जाता है। जब वातावरण का तापमान कम हो जाता है, तो यह भाप ठण्डी हवा के सम्पर्क में आकर पानी के छोटे-छोटे कणों में बदल जाती है। और यही पानी के कण हमें दिखाई देने लगते हैं। गर्मी के दिनों में भी अगर हम दर्पण पर मुँह से हवा छोड़ें तो धुँधलापन और गीलापन महसूस होता है, जो भाप के कारण ही होता है।

तुम्हारा दूसरा सवाल है कि मुर्गी अण्डे पर क्यों बैठती है?

जवाब: शरीर की जैविक क्रियाओं के लिए एक निश्चित तापक्रम की ज़रूरत होती है। जब मुर्गी अपने अण्डों पर बैठती है तो वह उन्हें अपने शरीर की गर्मी देती है। मुर्गी के अण्डे में भ्रूण के विकास के लिए यह ज़रूरी है कि उसे निश्चित तापक्रम मिलता रहे। जब मुर्गी अण्डों को सेती है, तो वह अपने शरीर की गर्मी से अण्डों को गरमा रही होती है। अण्डों को सेने की यह प्रक्रिया और भी पक्षियों में होती है। अब कभी ध्यान-से देखना कि पक्षी घोंसले में लगातार कई दिन अण्डों पर बैठकर, उन्हें गरमाते हैं।

इसी तरह, आगे भी तुम्हारे दिमाग में जो भी सवाल उठें, उन्हें मुझे बेहिचक लिखकर भेजना। मैं तुम्हारे सवालों के जवाब देने की कोशिश करूँगा।

अपने दोस्तों को नमस्ते कहना। और हाँ, अपने शिक्षक को भी मेरा नमस्ते कहना।

तुम्हारी कक्षा में कौन-कौन-से प्रयोग हुए और कौन-से नहीं, उनके बारे में बताना। यह भी बताना कि बाल विज्ञान तुम्हें और तुम्हारे दोस्तों को अच्छी क्यों लगती है। तुम्हारे दिमाग में जो भी सवाल उठें, उनको मुझे बेहिचक लिखना।

पत्र ज़रूर लिखना।

प्यार सहित

तुम्हारा सवालीराम

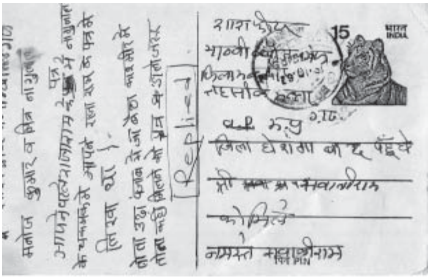

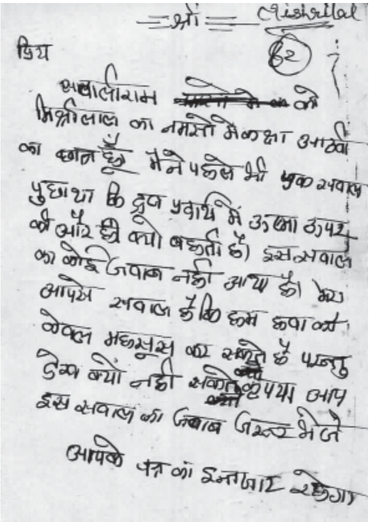

श्री Mishrilal

प्रिय

सवालीराम को
मिश्रीलाल का नमस्ते मै कक्षा आठवीं का छात्र हूँ मैने पहले भी एक सवाल पुछा था कि द्रुव पदार्थ मे उजा ऊपर की ओर ही क्यो बढ़ती है। इस सवाल का कोई जवाब नही आया है मेरा आपसे सवाल है कि हम हवा को केवल महसुस कर सकते है परन्तु देख क्यों नही सकते कृपया आप इस सवाल का जवाब जरूर भेजे

आपके पत्र का इन्तजार रहेगा

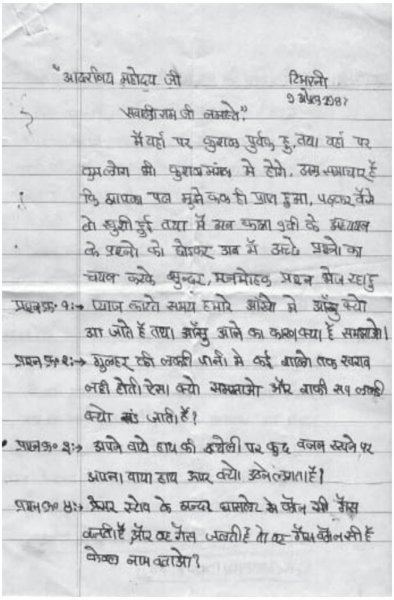

"आदरणीय महोदय जी   टिमरनी
9 अप्रैल 1987

सवालीराम जी नमस्ते"

मैं यहाँ पर कुशल पुर्वक हु, तथा वहाँ पर तुम लोग भी कुशल मंगल मे होगे. अब समाचार है कि आपका पत्र मुझे कल ही प्राप्त हुआ, पढ़कर बैसे ही खुशी हुई तथा मैं अब कक्षा 9वी के अध्याय के प्रश्नो को छोड़कर अब मैं अच्छे प्रश्नो का चयन करके सुन्दर, मनमोहक प्रश्न भेज रहा हु

प्रश्न क्र॰ 1:→ प्याज काटते समय हमारे आँखो मे आँसु क्यो आ जाते है तथा आँसु आने का कारण क्या है समझाओ।

प्रश्न क्र॰ 2:→ गुलहर की लकड़ी पानी मे कई सालो तक खराब नही होती ऐसा क्यो समझाओ और बाकी सब लकड़ी क्यो सड़ जाती हैं?

प्रश्न क्र॰ 3:→ अपने बाये हाथ की हथेली पर कुछ वजन रखने पर अपना बाया हाथ ऊपर क्यो उठने लगता है?

प्रश्न क्र॰ 4:→ प्रेसर स्टोव के अन्दर घासलेट से कौन सी गैस जलती है और वह गैस जलती है तो वह गैस कौनसी है केवल नाम बताओ?

चित्र-1: सवालीराम के नाम लिखी गई, सवालों से भरी कुछ चिट्ठियाँ।

कक्षा में सभी बच्चों और मास्साब ने चिट्ठी को बड़े ध्यान-से सुना था। जब नारंगी चिट्ठी को पढ़ रही थी तब कक्षा में सूई पटक सन्नाटा छाया हुआ था। हर कोई ध्यान-से सुन रहा था। हरेक बच्चे को ऐसा एहसास हो रहा था मानो उनको ही चिट्ठी लिखी गई है। जैसे कि जब हम बरसात के दिनों में इन्द्रधनुष देखते हैं तो प्रत्येक व्यक्ति का अपना-अपना अलग-अलग इन्द्रधनुष होता है, वैसा ही एहसास सवालीराम का यह खत बच्चों को दे रहा था।

यह अलग बात थी कि सवालीराम की चिट्ठी में लिखे जवाब का सम्पूर्ण अर्थ नारंगी समेत सभी बच्चों को पूरी तरह से समझ नहीं आया था। मगर वे उस सन्दर्भ को अपने से जोड़ने की पुरज़ोर कोशिश कर रहे थे।

नारंगी ने अटक-अटककर, पूरी चिट्ठी पढ़कर मास्साब को थमा दी। मास्साब चिट्ठी को अलट-पलटकर देखते हुए खुश हो रहे थे। उन्होंने पहले तो पूछा, "ये तुमने कब लिखी? हमें तो पता ही नहीं चला। बहुत अच्छा किया।"

भागचन्द्र मास्साब की हाँ-में-हाँ मिलाते हुए बोला, "हमको भी नहीं बताया इसने। ...पर अच्छा किया इसने।"

नारंगी को मास्साब ने शाबाशी दी। "तुमने बहुत अच्छा किया। तुम्हारी जिज्ञासा की दाद देनी चाहिए।"

नारंगी को मास्साब की यह बात अच्छी लगी। मगर वह सोच रही थी कि चिट्ठी लिखकर तो वह कभी की भूल गई थी। उसने कोई तीन-चार महीने पहले चिट्ठी लिखकर डाक के डिब्बे में डाल दी थी। और उसे

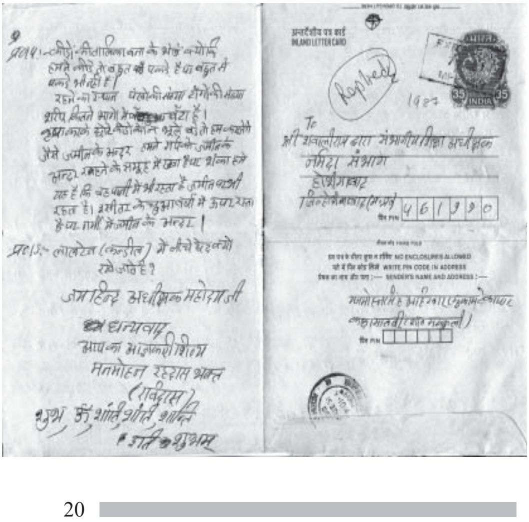

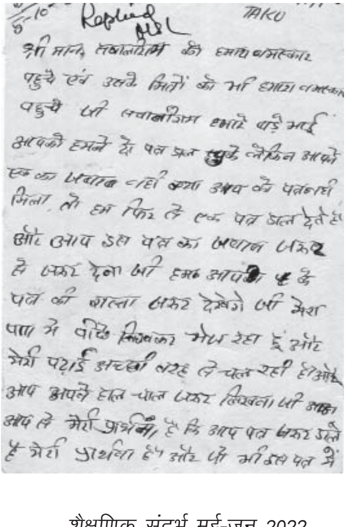

Replied

TAKU

श्री मान् सवालीराम जी को हमारा नमस्कार पहुँचे एवं उसके मित्रों को भी हमारा नमस्कार पहुँचे श्री सवालीराम हमारे बड़े भाई आपको हमने दो पत्र डाल चुके लेकिन आपका एक का जवाब नहीं क्या आप को पत्र नहीं मिला तो हम फिर से एक पत्र डाल देते हैं और आप इस पत्र का जवाब जरूर से जरूर देना और हम आपके पत्र की रास्ता जरूर देखेंगे और मेरा पापा ने चिट्ठी लिखकर भेज रहा हूँ और मेरी पढ़ाई अच्छी तरह से चल रही है और आप अपने हाल-चाल जरूर लिखना और आप से मेरी प्रार्थना है कि आप पत्र जरूर डाले है मेरी प्रार्थना है और यो भी इस पत्र में

चिट्ठी लिखने की प्रेरणा मास्साब से ही मिली थी। मास्साब कभी-कभार सवालीराम का ज़िक्र कर देते थे कि कोई सवालीराम है, चाहो तो तुम चिट्ठी लिख सकते हो।

सवालीराम को चिट्ठी लिखी जाए, यह स्कूल की पढ़ाई के दौरान कोई ज़रूरी तो नहीं था। मास्साब ने भी कभी किसी बच्चे के साथ ज़ोर-ज़बर्दस्ती नहीं की थी। मगर नारंगी को मास्साब की सवालीराम वाली बात कुछ जम गई और उसने चिट्ठी लिख दी। इसका नतीजा था सवालीराम का पत्र, जो एक ओर नारंगी को खुशी का एहसास दे रहा था, तो वहीं दूसरी ओर अन्य बच्चों को चिट्ठी लिखने की प्रेरणा।

वैसे मास्साब भी प्रेरित हो रहे थे कि वे बाल वैज्ञानिक विषय पढ़ाने के दौरान, आने वाली समस्याओं का हल जानने के लिए सवालीराम को पत्र लिखें। यह प्रेरणा उन्हें 'होशंगाबाद विज्ञान' नामक बुलेटिन से मिली थी। 'होशंगाबाद विज्ञान बुलेटिन' एक अनियमित पत्रिका थी जो शिक्षकों के बीच संवाद का ज़रिया बन गई थी। बुलेटिन में भी सवालीराम का कॉलम ज़रूर होता था।

आज बाल विज्ञान का पीरियड, नारंगी के नाम आई सवालीराम की चिट्ठी को ही समर्पित था। कक्षा में सवालीराम और सवालीराम की चिट्ठी छाए हुए थे।

स्कूल की छुट्टी के बाद भी बच्चों के बीच सवालीराम ही चर्चा में बने हुए थे। हर कोई उस चिट्ठी को देखना और पढ़ना चाह रहा था। नारंगी को इस बात का भी गर्व था कि उसे सवालीराम ने अपने हाथों से चिट्ठी लिखी है। स्कूल से घर जाते हुए नारंगी अपने साथियों से बोली, "देख न, मेरे को तो पहली बार किसी ने चिट्ठी लिखी है।"

"और हमको भी नमस्ते लिखा..." भागचन्द्र बोला।

"चल हट!" नारंगी तपाक-से बोली।

"अरे ये क्या कह रही है। हम तेरे

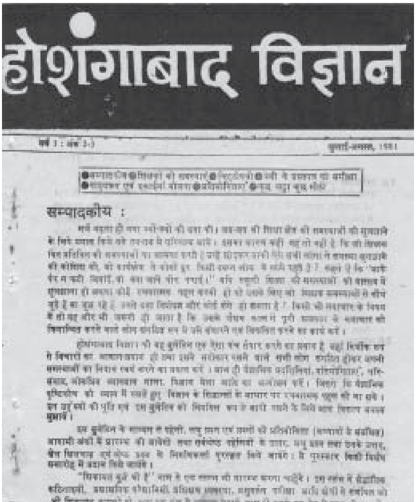
होशंगाबाद विज्ञान

सम्पादकीय :

चित्र-2: 'होशंगाबाद विज्ञान बुलेटिन' के जुलाई-अगस्त, 1981 के अंक का मुखपृष्ठ। (वर्ष 1 : अंक 2-3)

दोस्त न हों तो बता।” इसरार बीच में टपक पड़ा।

“हाँ, बात तो सही है। मेरा तो मन करता है कि सवालीराम से मिलूँ।” नारंगी बोली।

रघु को कुछ-कुछ याद आ रहा था कि नारंगी एक बार पोस्ट-ऑफिस गई थी, और उसके बस्ते में एक कार्ड भी देखा था उसने। रघु बोला, “अच्छा... अब समझ में आया। तू उस दिन पोस्ट-ऑफिस इसीलिए गई थी।”

नारंगी मुँह बनाकर बोली, “तू भी लिख देता। तेरे को किसी ने मना थोड़े ही किया था।”

नारंगी सोचती जा रही थी कि वह अब और भी सवाल पूछेगी। और केवल सवालीराम से ही नहीं, हर किसी से, और फिर अपने दोस्तों से उन पर बातचीत करेगी।

घर पहुँचकर उसने चिट्ठी बापू और माँ को बताई। माँ और बापू की खुशी का ठिकाना नहीं था। माँ ने नारंगी को अपने से लिपटा लिया। वह कहे जा रही थीं, “छोरी, बाँच के तो सुना।”

माँ ने बड़े गर्व से चिट्ठी नारंगी के बापू को देते हुए कहा, “देखो तो, सत्यदीप, ज़बरदस्त काम कर दिया छोरी ने...”

नारंगी के बापू को अपनी बेटी के चेहरे पर खुशी के साथ-साथ आत्मविश्वास भी दिखाई दे रहा था। बेशक, सवालीराम ने चिट्ठी का जवाब लिखकर नारंगी में सवाल करने और चिट्ठी लिखने के आत्मविश्वास का जज़्बा पैदा कर दिया।

...जारी

कालू राम शर्मा (1961-2021): अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, खरगोन में कार्यरत थे। स्कूली शिक्षा पर निरन्तर लेखन किया। फोटोग्राफी में दिलचस्पी। *एकलव्य* के शुरुआती दौर में धार एवं उज्जैन के केन्द्रों को स्थापित करने एवं मालवा में विज्ञान शिक्षण को फैलाने में अहम भूमिका निभाई।

प्रथम चित्र: कैरन हैडॉक: पिछले तीस सालों से भारत में शिक्षाविद, चित्रकार और शिक्षक के रूप में काम कर रही हैं। बहुत-सी चित्रकथाओं, पाठ्यपुस्तकों और अन्य पठन सामग्रियों का सृजन किया है और उनमें चित्र बनाए हैं।